संपादकीय

असंसदीय कृत्य

जब देश की नई संसद में सदन की कार्रवाई शुरू हुई, तो विश्वास था कि देश में संसदीय मर्यादाओं को नई गरिमा मिलेगी। लेकिन हाल ही में संपन्न शीतकालीन सत्र के दौरान हुए हंगामे ने देश के आम जनमानस को गहरे तक निराश ही किया। सड़क पर सांसदों की धक्का-मुक्की और आरोप-प्रत्यारोपों ने उन मतदाताओं को ठेस पहुंचायी, जिन्होंने उन्हें अपने प्रतिनिधि के रूप में चुना था। आरोप-प्रत्यारोप तो सांसदों की पुरानी परंपरा रही है, लेकिन इस बार तो बात धक्का-मुक्की से लेकर थाने तक जा पहुंची। ऐसे में सवाल किया जा सकता है कि जब हमारे माननीयों का व्यवहार ऐसा होगा तो आम आदमी से क्या उम्मीद की जा सकती है। दरअसल, महाराष्ट्र चुनाव में करारी शिकस्त से पस्त विपक्ष सरकार पर हमले के लिये मुद्दे की तलाश में था। उन्हें मुद्दा खुद गृहमंत्री अमित शाह ने दे दिया। संविधान के रचयिताओं में अग्रणी डॉ. बी.आर. अंबेडकर के बारे में शाह की टिप्पणी के बाद एनडीए और इंडिया गठबंधन के सांसदों के बीच आरोप-प्रत्यारोपों का सिलसिला कालांतर टकराव में बदल गया। निश्चय ही राजनेताओं के व्यवहार से देश-विदेश में कोई अच्छा संदेश नहीं गया। जिन सांसदों के हाथ में कानून की गरिमा बनाये रखने की जिम्मेदारी है, वे हाथ ही धक्का-मुक्की में लिप्त होने लगे। जो जनप्रतिनिधियों की कथनी-करनी के अंतर को ही दर्शाता है। सही मायनों में यह मतदाताओं का भी अपमान है जिन्होंने उन्हें चुनकर संसद में भेजा है। निस्संदेह, जब अमित शाह ने कहा कि डॉ. अंबेडकर का नाम जपना एक फैशन बन गया तो ऐसा करके उन्होंने अपना कद कदापि नहीं बढ़ाया। इस तरह उन्होंने संविधान के जनक को एक अनावश्यक विवाद में घसीट लिया। महाराष्ट्र चुनाव में परास्त के बाद खस्ता हाल में आये विपक्ष को इस विवाद ने राजग पर एकजुट हो हमलावर होने का अवसर दे दिया है। विपक्ष ने भी मुद्दे को तुरंत लपक लिया। लेकिन इस तरह के विवाद को असंसदीय ही कहा जाएगा।

कालांतर में स्थिति यहां तक पहुंच गई कि शाह की बयानबाजी के बचाव में खुद प्रधानमंत्री को उतरना पड़ा। उन्होंने कांग्रेस पर राजनीतिक स्वार्थ के लिये दुर्भावनापूर्ण झूठ का सहारा लेने का आरोप भी लगाया। निस्संदेह, डॉ. बी.आर. अंबेडकर एक ऐसे राष्ट्रीय प्रतीक हैं, जिनकी गरिमा को कोई भी राजनीतिक पार्टी नजरअंदाज नहीं कर सकती। यह स्पष्ट ही है कि राजनीतिक लाभ के लिए दोनों प्रमुख पार्टियां उनकी विरासत पर कब्जा करने को यह खेल खेल रही हैं। उनका अमर्यादित व्यवहार इस स्थिति को और गंभीर बना देता है। विडंबना ही है कि ये स्थितियां तब पैदा हुईं जब संविधान को अपनाने के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में राष्ट्रव्यापी समारोह आयोजित कर रहा था। दुनिया को यह बताने का प्रयास कर रहा था कि लोकतंत्र, न्याय और समानता की कसौटी पर यह जीवंत दस्तावेज खरा उतरा है। निस्संदेह, इस बात में दो राय नहीं हो सकती कि संविधान के आदर्शों को बनाये रखना सभी सांसदों की सामूहिक जिम्मेदारी है। उनकी प्राथमिकता सामाजिक न्याय और समावेशी विकास को सुनिश्चित करने की दिशा में काम करने की होनी चाहिए, न कि आरोप-प्रत्यारोप व टकराव की सीमाएं लांघने की। वे कम से कम लोकतंत्र के मंदिर की मर्यादा और गरिमा को बनाये रखने का दायित्व तो निभा ही सकते हैं। यदि ऐसा न हुआ तो लोकतंत्र का यह मंदिर प्रहसन के रंगमंच में बदल जाएगा। साथ ही भारत के विश्व गुरु व विश्व बंधुत्व के नारे में भी कोई ताकिकता नहीं रह जाएगी। आज देश बेरोजगारी, महंगाई तथा विकास से जुड़ी तमाम समस्याओं से जूझ रहा है। ऐसे विवादों से तो मुख्य मुद्दों से ध्यान भटकता है। जबकि जनप्रतिनिधियों की प्राथमिकता जन कल्याण के रास्ते तलाशना होना चाहिए। निश्चित रूप से देश-दुनिया में इस विशालतम लोकतंत्र की कारगुजारियों का अच्छा संदेश तो कदापि नहीं जाएगा। हमारे जनप्रतिनिधियों को सोचना चाहिए कि जनता के करों के पैसे से चलने वाले सदन ने शीतकालीन सत्र में क्या हासिल किया। निश्चित रूप से इस सत्र के दौरान होने वाले अप्रिय विवादों से देश-दुनिया में कोई अच्छा संदेश तो कदापि नहीं गया है।

अंबेडकर की आड़ में वोट बैंक की कवायद

उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार और तमिलनाडु में देश के करीब आधे दलित रहते हैं। उत्तर प्रदेश और बिहार दलितों पर अत्याचारों के लिए कुख्यात रहे हैं। इन दोनों राज्यों में भाजपा से पहले कथित दलित हितैषी कांग्रेस, समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी की सरकारें रही हैं। वर्ष 2019 के आंकड़ों के मुताबिक केंद्रीय मंत्रालयों के 19 विभागों में कुल 123155 लोग काम करते हैं। इनमें से अनुसूचित जाति के 15.34 फीसदी, अनुसूचित जनजाति के 6.18 फीसदी और अन्य पिछड़ा वर्ग के 17.5 फीसदी लोग कार्यरत हैं।

राजनीतिक दलों के लिए दलित वोट बैंक शुरू से ही सत्ता बटोरने का साधन रहा है। हकीकत में दलितों की दयनीय हालत को बदलने के बजाय राजनीतिक दल ऐसा कोई मौका नहीं छोड़ना चाहते जिससे यह साबित कर सकें कि वे ही दलितों के असली मसीहा हैं। यही वजह है कि संसद में अंबेडकर को लेकर जोरदार हंगामा बरपा रहा। विपक्षी दल दलित वोट बैंक को भाजपा से अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए अंबेडकर के जरिए पुरजोर कोशिश में जुटे हुए हैं। लोकसभा में भाजपा गठबंधन के हाथों लगातार तीसरी बार पराजय झेल चुके विपक्षी दल केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के इसीपेंच की मांग से हार की क्षतिपूर्ति करना चाहते हैं। असलियत में इन दलों को न अंबेडकर के उसूलों की परवाह है और न ही दलितों के हितों की। संविधान पर संसद में चल रही बहस के दौरान गृह मंत्री अमित शाह ने अपने भाषण के दौरान कहा था कि आजकल अंबेडकर का नाम लेना एक फैशन बन गया है। उन्होंने कहा कि अंबेडकर, अंबेडकर, अंबेडकर, अंबेडकर इतना नाम अगर भगवान का लेते तो सात जन्मों तक स्वर्ग मिल जाता। अमित शाह के पूरे भाषण के एक अंश को लेकर विपक्ष ने शाह के इसीपेंच की मांग करते हुए संसद की कार्यवाही ठप कर दी। विपक्ष के हाथ तो मानो सुनहरा मौका लग गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अमित शाह के बचाव में पीछे नहीं रहे। मोदी ने भाषण के बारे में लंबा पोस्ट किया। उन्होंने कहा कि अमित शाह ने संसद में अंबेडकर को अपमानित करने के काले अध्याय को एक्सपोज किया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के अंबेडकर के प्रति किए गए पापों की लंबी फेहरिस्त है, जिसमें उन्हें दो बार चुनावों में हराना भी शामिल है। अमित शाह के इस बयान पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर राहुल गांधी ने लिखा कि मनुस्मृति मानने वालों को अंबेडकर जी से तकलीफ बेशक होगी ही। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि गृह मंत्री अमित शाह ने भरे सदन में बाबा साहेब का अपमान किया है। उससे फिर एक बार सिद्ध हो गया है कि बीजेपी और आरएसएस तिरंगे के खिलाफ थे। दलित वोट बैंक के आकर्षण से इस विवाद में कूदने में कोई भी दल पीछे नहीं रहा। उधर उद्धव ठाकरे ने कहा कि अमित शाह की टिप्पणी भाजपा के अहंकार को दर्शाती है और इसने पार्टी के असली चेहरे को उजागर किया है। उन्होंने यह भी पूछा कि भाजपा के सहयोगी दल, जैसे जनता दल (यूनाइटेड), तेलुगु देशम पार्टी और रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया, क्या अंबेडकर के बारे में अमित शाह की टिप्पणी से सहमत हैं? आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल ने कहा कि शाह की टिप्पणी बेहद अपमानजनक है। केजरीवाल ने कहा कि बाबा साहेब का अपमान हिंदुस्तान नहीं सह सकता। वे इस देश के लिए भगवान से कम नहीं हैं। राष्ट्रीय जनता दल के प्रमुख लालू प्रसाद यादव ने कहा कि गृह मंत्री जी राजनीति छोड़ देनी चाहिए और चले जाना चाहिए। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव कहा कि बहुत लंबा भाषण था। पत्रकारों से बेहतर कौन जानता होगा कि जुमले से किसको जाना जाता था। आज हमको 11 जुमलों का संकल्प सुनने को मिला। उत्तर प्रदेश के नगीना से सांसद चंद्रशेखर ने भी अमित शाह के बयान को अंबेडकर के संघर्ष का अपमान बताया। इन बयानों में राजनीतिक दलों की कोरी चिंताएं झलकती हैं।

दलितों के साथ इस देश में किस तरह की राजनीति की गई है, इसका बड़ा उदाहरण बहुजन समाज पार्टी सुप्रीमो मायावती हैं। मायावती के उत्तर प्रदेश में शासन के दौरान सरकारी लूट-खसूट में कसर बाकी नहीं रही। मायावती ने पूरे प्रदेश में चुनाव चिन्ह हाथी और अंबेडकर के साथ खुद की मूर्तियां सरकारी खर्च पर लगवाईं। वर्ष 2013 में लोकायुक्त ने जांच करके एक रिपोर्ट दी थी। लोकायुक्त ने रिपोर्ट में कहा था कि 14 अरब से ज्यादा का घोटाला है। आश्चर्य यह है कि गैर भाजपा राज्यों में दलितों पर हुए अत्याचार विपक्षी दलों को नजर नहीं आए। राजस्थान में कांग्रेस के शासन के दौरान दलित युवतियों से सामूहिक बलात्कार और हत्या की घटनाएं हुईं। अंबेडकर की दुहाई देने वाले विपक्षी दल आज तक यह खुलासा नहीं कर सके कि किस प्रदेश में दलितों ने सर्वाधिक तरक्की की है? दलितों के सामाजिक-आर्थिक जीवन स्तर में कितना बदलाव आया है? दरअसल भ्रष्टाचार की गाज दलितों की योजनाओं पर भी गिरी है। विपक्षी दलों का लक्ष्य भाजपा को अंबेडकर और दलितों के नाम पर घेर कर दलित वोट को मोड़ना है ताकि चुनाव के दौरान उसका फायदा उठाया जा सके। राजनीतिक दलों को वाकई दलितों की चिंता होती तो हाल ही में सुप्रीम कोर्ट द्वारा दलितों में महादलितों की पहचान कर अलग से आरक्षण और क्रीमीलेयर को आरक्षण से बाहर किए जाने पर एकराय बन चुकी होती। हालत यह है कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद किसी भी राजनीतिक दल ने निर्णय को मानना तो दूर, उस पर चर्चा करने की हिम्मत तक तक नहीं दिखाई। सारे दलों को यही लगता है जैसा चल रहा है, चलता रहे। आरक्षण पर कुछ बोलने से कहीं ऐसा न हो कि उनका दलित वोट बैंक खिसक जाए। आरक्षण के बावजूद जिन दलितों को सरकारी नौकरियों का फायदा मिल गया, उनको छोड़ कर देश की बड़ी आबादी आज भी बुनियादी सुविधाओं और समानता के अधिकार से वंचित है। आंकड़े बताते हैं कि क्रीमीलेयर नौकरियों में आरक्षण का लाभ न पाने वाले लोगों को नुकसान पहुंचा रही है। साल 2023 की संसदीय रिपोर्ट के मुताबिक केंद्र सरकार के पदों पर एससी/एसटी के लिए आरक्षित नौकरियों का एक बड़ा हिस्सा हर साल खाली रह जाता है। देशभर में दलितों की कुल आबादी 25 करोड़ 9 लाख 61 हजार 940 है। 2011 की जनगणना के मुताबिक देश की कुल आबादी में 24.4 प्रतिशत हिस्सेदारी दलितों की है। अनुसूचित जाति (एससी) की जनसंख्या 16 करोड़ 66 लाख 35 हजार 700 है, जो कुल आबादी का 16.2 प्रतिशत है। जबकि अनुसूचित जाति की आबादी 8 करोड़ 43 लाख 26 हजार 240 है। यह देश की कुल जनसंख्या का 8.2 फीसदी है। उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार और तमिलनाडु में देश के करीब आधे दलित रहते हैं। उत्तर प्रदेश और बिहार दलितों पर अत्याचारों के लिए कुख्यात रहे हैं। इन दोनों राज्यों में भाजपा से पहले कथित दलित हितैषी कांग्रेस, समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी की सरकारें रही हैं। वर्ष 2019 के आंकड़ों के मुताबिक केंद्रीय मंत्रालयों के 19 विभागों में कुल 123155 लोग काम करते हैं। इनमें से अनुसूचित जाति के 15.34 फीसदी, अनुसूचित जनजाति के 6.18 फीसदी और अन्य पिछड़ा वर्ग के 17.5 फीसदी लोग कार्यरत हैं। इन आंकड़ों से जाहिर है कि देश के दलित वर्ग का ज्यादातर हिस्सा आज भी सफाई करने और मृत पशुओं से व्यवसाय करने जैसे परंपरागत कार्यों से जीविकोपार्जन करने को मजबूर है। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि आजादी के 77 साल बाद भी राजनीतिक दलों को दलितों की यह हालत दिखाई नहीं दी। अंबेडकर के नाम पर राजनीतिक दल दलितों के बजाय खुद का भला करने में जुटे हुए हैं। दलितों के कल्याण के लिए ठोस विमर्श और कार्यान्वयन की जरूरत है।

-योगेंद्र योगी

सूचना

दैनिक सच एक्सप्रेस में प्रदेशभर के 42 जिला प्रतिनिधि व 200 से अधिक तहसील और विकासखण्ड प्रतिनिधि सेवाएं दे रहे हैं। लगभग यह सभी किसी अन्य न्यूज एजेंसी या सोशल मीडिया से भी जुड़े हुए हैं। अखबार के अलावा किसी अन्य प्लेटफार्म पर इनकी टिप्पणी या समाचार को दैनिक सच एक्सप्रेस से जोड़कर न देखा जाए।

प्रबंध सम्पादक

जीवन समाधान

जरा सी जिन्दगी है हिलमिलकर बिताओ न किसी से लड़ो न किसी को लड़ाओ

महाराज वैभव भटेले
(वर्ग, अध्यात्म एवं राष्ट्रीयता के ओजस्वी वक्ता)
Mobile No.
9303139229

अतीत कैसा रहा इस पर विचारना व्यर्थ है। भविष्य क्या होगा इस पर सोचना अनर्थ है. जीवन तो वर्तमान में है हर वो पल जिससे हम गुजर रहे हैं उसे सुनहरा बनाओ। अर्थात सुख शांति के साथ जीवन के पलपल का आंनद लो। भविष्य के सपने गढ़ना अच्छी बात है लेकिन उसके लिए लड़ना बहुत बुरी बात है। क्योंकि भविष्य क्या होगा इसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। अपनी चिंता करो। भावी पीढ़ियों का क्या होगा? वही होगा जो भगवान की मर्जी में होगा। अत: फिर दोहरा दें अपने वर्तमान को गढ़ो। क्योंकि जरा सी जिंदगी है इसे हिलमिलकर बिताओ न किसी से लड़ो और न किसी को लड़ाओ! इसलिए दुनिया में जीवन से बड़ा कुछ भी नहीं है और यह मनुष्य देह तो हमारे असंख्य जन्मों के संग्रहित पुण्यों का दुर्लभ वरदान है। तभी तो तुलसी बाबा ने लिखा- बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथहिं गावा।। इसलिए मनुष्य देह की विशेषता तो देखो कि इसे देवता भी दुर्लभ समझते हैं और इस मनुष्य देह को प्राप्त करने लालायित रहते हैं। यह अच्छी बात है मनुष्य को अपने अधिकारों की मांग रखनी ही चाहिए। लेकिन आपस में लड़ झगड़कर और लोगों की जान गंवाकर नहीं। लोगों का चैन छीनने और जान गंवाने का अधिकार किसी को नहीं है। अगर शक्तिशाली हो तो समाज को संरक्षण दो। धनवान हो तो जरूरत मंदो का सहयोग करो। और कहीं विशेष सिद्धि हाथ लग गई है ज्ञान प्राप्त हो गया है तो उसका उपयोग सुसभ्य स्वस्थ सुशिक्षित और सम्पन्न समाज के सृजन में उपयोग करो। ज्ञान की ऐसी बात करिये कि समाज संस्कार वान बने। ईर्ष्या बैर और घृणा से हटकर एकदूसरे के शुभचिंतक सहयोगी मित्र और प्रेमी बनकर अपने मानव होने के अर्थ को सिद्ध करें। मानव मानव में संघर्ष पशुता के सिवाय कुछ भी नहीं है। सचमुच हमें इस धरती से प्यार है तो इस मानव संघर्ष से बचाओ। क्योंकि जब युद्ध होता है तो ये धरती विलाप करती है। इसलिए आओ हम युद्ध रहित विश्व का अभियान चलाएं। सभी को सुखी समृद्ध बनाएं और सभी जीवन समाधान पाएं।

सच वाणी

सभी आलेख लेखकों के अपने विचार हैं। दैनिक सच एक्सप्रेस सभी विषयों पर तटस्थ था, है और रहेगा।

रुक्मिणी अष्टमी व्रत : मनोकामनाएं होती हैं पूरी

प्रत्येक वर्ष पौष मास के कृष्णपक्ष की अष्टमी को रुक्मिणी अष्टमी मनाई जाती है। मान्यतानुसार रुक्मिणी अष्टमी के दिन विधिपूर्वक देवी रुक्मिणी की पूजा-अर्चना करने से हर मनोकामना पूर्ण होती है और जीवन के समस्त कष्टों का अंत होता है। इस बार 23 दिसंबर को रुक्मिणी अष्टमी पर्व मनाया जाएगा। इस दिन देवी रुक्मिणी का व्रत रखा जाता है। इस दिन भगवान कृष्ण व रुक्मिणी की पूजा का विधान है। मान्यताओं के अनुसार इसी दिन द्वापर युग में देवी रुक्मिणी का जन्म हुआ था। वे विदर्भ नरेश भीष्मक की पुत्री थीं। उन्हें पौराणिक शास्त्रों में लक्ष्मीदेवी का अवतार कहा गया है। मान्यतानुसार रुक्मिणी अष्टमी के दिन विधिपूर्वक देवी रुक्मिणी की पूजा-अर्चना करने से हर मनोकामना पूर्ण होती है और जीवन के समस्त कष्टों का अंत होता है।

रुक्मिणी अष्टमी का महत्त्व

मान्यता के अनुसार पौष मास की कृष्णपक्ष की अष्टमी को ही माता लक्ष्मी ने देवी रुक्मिणी के रूप में जन्म लिया था। रुक्मिणी दिखने में अति सुंदर एवं सर्वगुणों से संपन्न थी। उनके शरीर पर माता लक्ष्मी के समान ही लक्षण दिखाई देते थे, इसीलिए उन्हें लोग लक्ष्मीस्वरूप भी कहते थे। मान्यता है कि जो कोई स्त्री रुक्मिणी अष्टमी का व्रत करती है तो उस पर देवी हमेशा अपनी कृपा बनाए रखती हैं और उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण करती हैं।

व्रत कथा- द्वापर युग में विदर्भ देश के राजा भीष्मक के यहां एक अति सुंदर पुत्री ने जन्म लिया। जन्म के समय राजा की पुत्री इतनी गुणवान व सुंदर लग रही थी मानो साक्षात माता लक्ष्मी ने उसके घर में जन्म लिया है। राजा ने उसका नाम रुक्मिणी रखा। राजकुमारी रुक्मिणी के पांच भाई थे। धीरे-धीरे राजकुमारी रुक्मिणी बड़ी होती गई और उसकी शरीर की सुंदरता व मुख का तेज और चमक गया तो उसे सभी लोग लक्ष्मीस्वरूप मानते थे। रुक्मिणी ज्यादातर अपने पिता भीष्मक के साथ रहती थी। उस समय राजा से कोई भी मिलने आता तो वह श्री कृष्ण की ही प्रशंसा करता और भगवान विष्णु जी की तरह उसके शरीर के गुणगान करते। श्री कृष्ण जी की प्रशंसा सुनकर रुक्मिणी ने मन ही मन में कृष्ण जी को अपने पति रूप में चुन लिया। किंतु रुक्मिणी का बड़ा भाई रुक्मी अपने खास मित्र शिशुपाल से उसका विवाह कराके अपनी मित्रता को और भी गहरी करना चाहता था। राजा भीष्मक व उसकी रानी ने अपने पुत्र रुक्मी को बहुत समझाया, किंतु वह नहीं माना। शिशुपाल से रुक्मिणी का विवाह तय कर दिया गया, जिसके बाद राजकुमारी रुक्मिणी बहुत दुखी हुईं। और कुछ दिनों के बाद शादी की तारीख तय हो गई। पूरे राज्य में राजकुमारी रुक्मिणी के विवाह की तैयारी होने लगी। तब रुक्मिणी ने अपने कुल गुरु को अपना संदेश दिया और कहा कि हे गुरुदेव, आप शीघ्र ही द्वारिका नगरी जाइए और हमारा संदेश भगवान कृष्ण जी को देना। जिसके बाद कुल गुरु द्वारिका नगरी गए और श्री कृष्ण जी को वह संदेश देते हुए सारा वृत्तांत सुना दिया। कृष्ण जी ने संदेश को खोलकर पढ़ा तो राजकुमारी रुक्मिणी ने लिखा हुआ था, 'हे द्वारिकानंदन, मैंने आप ही को अपने पति रूप में चुना है और मेरे बड़े भैया मेरा विवाह उनके परम मित्र शिशुपाल के साथ कराना चाहते हैं, किंतु मैंने तो आपको पति रूप में चुना है, मैं किसी और से विवाह नहीं कर सकती, कृपा करके मुझे अपने चरणों की दासी स्वीकार करें। यदि आप मुझे पत्नी रूप में स्वीकार नहीं करेंगे तो मैं अपने प्राण त्याग दूंगी।' यह पढ़कर कृष्ण जी ने उस कुल गुरु से कहा कि राजकुमारी से कहना कि वो गुप्त रूप से बहन हमारी प्रतीक्षा करें। इसके बाद कुछ घटनाक्रम के उपरांत श्री कृष्ण जी रुक्मिणी को अपने रथ में ले गए। शिशुपाल ने इसका प्रतिरोध किया, किंतु अंतत: वह हार गया और श्री कृष्ण व रुक्मिणी जी का विवाह हो गया।

व्रत पूजा विधि- ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर व्रत रखने वाली स्त्रियां स्वच्छ वस्त्र धारण करें। इसके बाद भगवान सत्यनारायण, पीपल व तुलसी को अर्घ्य दें। मान्यताओं के अनुसार पीपल में भगवान विष्णु और तुलसी में माता लक्ष्मी जी का वास होता है। घर के मंदिर में गंगाजल से छिड़काव कर एक चौकी स्थापित करें और उस पर लाल रंग का कपड़ा बिछाएं। इसके बाद चौकी पर सर्वप्रथम भगवान गणेश की स्थापना करें और फिर भगवान कृष्ण और देवी रुक्मिणी की मूर्ति स्थापित करें। चौकी के एक ओर शुद्ध जल से भरा हुआ मिट्टी का कलश रखकर ऊपर आम, अशोक के पत्ते रखें और फिर एक नारियल रखें। अब पूजा आरंभ करें। पूजन करते समय सर्वप्रथम भगवान गणेश जी की पूजा करें, फिर भगवान कृष्ण व देवी रुक्मिणी को जल से स्नान कराएं और फिर उनका अभिषेक करें। इसके बाद देवी रुक्मिणी को फल, फूल, रौली-मौली, चावल, सुपारी, लौंग, नैवेद्य, अक्षत, चंदन, धूप, दीप आदि अर्पित करें। पूजा के दौरान भगवान कृष्ण को पीले रंग के वस्त्र अर्पित करें और माता रुक्मिणी को लाल रंग के वस्त्र और शृंगार का सामान अर्पित करें। इसके उपरांत रुक्मिणी अष्टमी व्रत की कथा सुनें और आरती करें। भोगस्वरूप माता रुक्मिणी को खीर चढ़ाएं और सभी उपस्थित लोगों में इसी प्रसाद का वितरण करें। इसके बाद गाय माता को भोजन देकर स्वयं भोजन ग्रहण कर व्रत का पारण करें। रुक्मिणी का विवाह श्री कृष्ण के साथ होने का उल्लेख महाभारत में भी प्राप्त होता है। अविवाहित स्त्रियां यदि इस दिन सच्चे मन से भगवान श्री कृष्ण और देवी रुक्मिणी की पूजा-अर्चना करती हैं तो उन्हें भी अपनी पसंद का जीवन साथी चुनने का अधिकार प्राप्त होता है तथा जीवन में मान-सम्मान की भी प्राप्ति होती है। अष्टमी तिथि बेहद शुभ होती है।

इस दिन जो भी जातक भगवान श्री कृष्ण, देवी रुक्मिणी और उनके पुत्र प्रद्युम्न की विधि-विधान से पूजा करते हैं, उनके सभी प्रकार के कष्ट दूर होते हैं। इस दिन भक्त प्रात:काल समय उठकर स्नान करने के उपरांत पूजा का संकल्प लेते हैं। इस दिन व्रत रखने का भी विधान बताया गया है। पूजा स्थल को गंगा जल से पवित्र करें, आसन मंडप स्थल या चौकी को रख कर उस पर श्री कृष्ण व देवी रुक्मिणी जी की प्रतिमा अथवा चित्र को स्थापित करना चाहिए। भगवान श्री कृष्ण और देवी रुक्मिणी का अभिषेक करना चाहिए। श्री कृष्ण जी को पीतांबरी वस्त्र तथा देवी रुक्मिणी को लाल वस्त्र एवं सौभाग्य दायक वस्तएं अर्पित करनी चाहिए। श्रीकृष्ण और देवी रुक्मिणी को चंदन का तिलक लगाना चाहिए तथा सुगंधित वस्तुओं और हल्दी व पुष्प द्वारा पूजा करनी चाहिए। देवी लक्ष्मी के मंत्रों का उच्चारण करने से आर्थिक क्षेत्र में शुभता प्राप्त होती है। इसके साथ विष्णु स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। तुलसी मिश्रित भोग अर्पित करना चाहिए। संध्या में पुन: भगवान श्री कृष्ण और माँ रुक्मिणी का पूजन करना चाहिए तथा पूजन का संकल्प पूरा होने के पश्चात ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए तथा सामर्थ्य अनुसार दान देना चाहिए।

पंचांग

ज्योतिषाचार्य
श्रीमती सुष्मा
शंकरलाल पुरोहित
मो: 8823008303

रविवार 22 दिसंबर 2024
सूर्योदय- प्रात: 6:53 बजे
सूर्यास्त- शाम 5:30 बजे
पंचदेया - 12:23
चंद्रास्त - 12:09
शक संवत् - 1946
वि. सं. संवत - 2081 विलंब
पूर्णिमांत महीना- पौष
पक्ष - शुक्ल
तिथि - सायंकाल 03:20 तक पश्चात् अष्टमी
नक्षत्र- पूर्वा फाल्गुनी सुबह 7:49 तक पश्चात् उत्तरा फाल्गुनी
योग - आयुष्मान रवि 7:04 तक पश्चात् सौभाग्य
करण - बव दोपहर 2:36 तक पश्चात बालव
सूर्य राशि - धनु
चंद्र राशि - सिंह

शुभांक 1-6-7

मेष

परिवार व भाई बंधुओं से सहयोग प्राप्त होने के योग। भाग्य पक्ष में रहने से अटके कार्य सम्पन्न। शिवजी की हरा फल अर्पित करें। शुभ अंक- 4, शुभ रंग - हरा।

वृष

धनलाभ, रुका हुआ धन भी इस अवधि में प्राप्त हो सकता है। शिवजी पर अक्षत अर्पित करें। शुभ अंक- 6 , शुभ रंग 2-1।

मिथुन

कार्य क्षेत्र में थोड़ी बाधा बन सकती है। शिवजी को दुर्वा अर्पित करें। शुभ अंक - 5 , शुभ रंग- पीला।

कर्क

अनावश्यक धन खर्च सम्भव, तोल समझकर खर्च करें। मानसिक तनाव की स्थिति बन सकती है। शिवजी को मखाने अर्पित करें। शुभ अंक - 4 , शुभ रंग- सफेद।

सिंह

दिन सामान्य। यद्यपि थोड़ा अनावश्यक खर्च की स्थिति बन सकती है, पर सोच समझकर धैर्य से कार्य करें तो परिस्थिति पक्ष में रहेंगी। शिवजी को लाल फल अर्पित करें। शुभ अंक-5 , शुभ रंग- लाल।

कन्या

मान सम्मान में वृद्धि। कार्य क्षेत्र में लाभ। व्यापारी वर्ग के लिए दिन शुभ। नवीं योजना पर कार्य कर सकते हैं। शिवजी को हरा बेल फल अर्पित करें। शुभ अंक- 4 , शुभ रंग- हरा।

तुला

कार्य क्षेत्र में लाभ। वरिष्ठ अधिकारी पक्ष में। पिता से सहयोग। भाई के स्वास्थ्य का अवश्य ध्यान रखें। शिवजी को अक्षत अर्पित करें। शुभ अंक- 8 , शुभ रंग- सफेद।

वृश्चिक

भाग्य प्रबल। कार्य क्षेत्र में विशेष लाभ प्राप्त हो सकता है। वाणी व जोश पर नियंत्रण आवश्यक। । शिवजी को लाल गुलाब का फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 6 , शुभ रंग- लाल ।

धनु

दिन थोड़ा कमजोर। कार्य क्षेत्र में रुकावटें बन सकती हैं। कोई विशेष निर्णय आज न लें।?आज चाय ताल लें। शिवजी को पीले फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 4 , शुभ रंग- पीला ।

मकर

दिन शुभ। परिवार में आज अच्छा सामंजस्य बना रहेगा। विशेष संयोग बन सकते हैं। वरिष्ठ अधिकारियों से लाभ। शिवजी को बासत तिल जल में मिश्रित कर अर्पित करें। शुभ अंक-6 , शुभ रंग- नीला।

कुंभ

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। ज्ञान पान का विशेष ध्यान रखें। कार्य क्षेत्र में उत्तम अवसर प्राप्त हो सकते हैं। व्यापारी वर्ग के लिए दिन शुभ । शिवजी को कोई फल अर्पित करें। शुभ अंक- 4 , शुभ रंग- नीला।

मीन

संतान के शैक्षिक उन्नति व्यवसाय योग बन सकते हैं। व्यापारी वर्ग व वस्त्राभरण क्षेत्र से जुड़े जातकों के लिए दिन शुभ। शिवजी को अक्षत अर्पित करें। शुभ अंक- 2 , शुभ रंग- पीला।

ग्रह स्थिति

दिशा शूल

पश्चिम दिशा में यात्रा वर्जित है। अतिआवश्यक होने पर दी या केला खा या के निवारे।

चौघड़िया

दा सुबह 7:30 से 9:00 तक
तान सुबह 9:00 से 10:30 तक
अमृत सुबह 10:30-12:00 तक
शुभ दिन 1:30-3:00 तक

अभिजीत मुहर्त

सुबह 11:47 से दिन 12:21 तक

सर्वार्थ सिद्धि योग

ता. 6 को सूर्योदय से शाम 4:31 तक। ता.10 को सूर्योदय से दिन 11:26 तक। ता. 12 को सूर्योदय से सुबह 8:08 तक। ता. 14 को सूर्योदय से रात्रि अंत तक। ता. 22 को सुबह 7:49 से रात्रि अंत तक। ता. 27 को रात्रि 8:08 से रात्रि अंत तक। ता. 29 को रात्रि 11:34 से रात्रि अंत तक।

द्विपुष्कर योग

ता. 7 को सुबह 9:10 से दिन 3:38 तक।
अमृत सिद्धि योग- ता. 14 को सूर्योदय से रात्रि अंत तक।

रवि योग

रवियोग- ता.4 को शाम 5:19 से ता.5 को सुबह 7:04 तक। ता. 6 को शाम 5:22 से ता. 7 को शाम 4:54 तक। ता. 9 को दिन 3:00 से ता. 11 को दिन 12:02 तक। ता. 13 को सुबह 7:54 से ता. 14 को सुबह 5:52 तक। ता. 21 को दिन 3:51 से ता.22 को सुबह 6:18 ।

पुष्य नक्षत्र

ता. 17 को रात्रि 2:52 से ता. 18 के रात्रि 3:22 तक।